International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
Volume-8, Issue-5 October- 2021
E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का अध्ययन

Manju Bala

Assistant Professor

College Of Education, Iimt University Ganganagar Meerut

सारांशः-

यह सच है कि अपनी योजनाओं और उन्हें कार्यान्वित करने के तौर-तरीकों की असली परीक्षा तब होती है, जब सामने दिखाई देने वाला क्षितिज सबसे ज्यादा अंधकारमय हो। यह सर्वविदित है कि इस समुचित ब्रहमाण्ड में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसके पास चिन्तन करने की शक्ति है। वह मनन कर सकता है, किसी तथ्य के बारे में तर्कपूर्ण ढंग से विचार कर सकता है, विश्लेषण कर सकता है। वह अज्ञात को ज्ञात बना सकता है। एक व्यक्ति की कार्य कुशलता तथा उसकी योग्यता सम्पूर्ण समाज के विकास तथा उसकी प्रगति को निर्धारित करती है और सम्पूर्ण समाज सम्पूर्ण देश की ओर इंगित करता है, और इस प्रकार विभिन्न देशों की उन्नति तथा प्रगति इस पूरे विश्व की प्रगति तथा उसकी उन्नति के लिए उत्तरदायी होता है।

प्रस्तावनाः-

मानवता के अभ्युत्थान के लिए, मानवीयता के संवेदात्मक पल्लवन के लिए तथा स्वात्मा को सर्वात्मा की दिशा दिखाने के लिए समय-समय पर मनीषी अवतरित होते रहते हैं, जो प्रचलित संकीर्णताओं की श्रंखला को विछिन्न कर जाति, धर्म, देश, काल आदि की सीमाओं को नकारकर अशेष विश्व के अपने हो जाते है, विराट विश्मात्मा का रूप बन जाते है। प्रत्येक प्राणी की पीड़ा उनके अपने प्राणों का स्वन्दन बन जाती है, परोपकार का पथ उनका अपना पथ बन जाता है तथा अपने देश की उन्नति अपनी उन्नति बन जाती है।

डॉ0 कलाम जी स्वयं अल्पसंख्यक समाज में उत्पन्न हुए थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों को बचपन से देखा और महसूस किया कि भारत में आज भी बहुत ज्यादा गरीबी और भुखमरी है। इनके हृदय में यही प्रश्न बार-बार उठता है कि क्या गरीब परिवार में जन्म लेना अभिशाप है? डॉ0 कलाम के जीवन की अन्तर्वेदना इस बात से उपजी थी कि भारत में एकात्म दर्शन को विस्तृत कर दिया गया है। उन्होंने भारत को विज्ञान तथा शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी देशों की पंक्ति में लाने के लिए अपने जीवन का कार्य क्षेत्र चुना।

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम का महत्व वैज्ञानिक क्षेत्रों में बहुमूल्य योगदान, सामाजिक उत्थान का आहनवान एवं सन्देश, ज्ञान की नई अवधारणा एवं उद्धारक के रूप में जाना जाता है। डॉ0 कलाम

भारत के ''मिसाइल मैन ऑफ इण्डिया'' तथा ''भूतपूर्व राष्ट्रपति'' के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने अग्रणी देशों की पंक्ति में भारत को ला खड़ा किया। डॉ0 कलाम जी ने अनेंक पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन तथा सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की जो समाज को नित नई दिशा देने में प्रेरक सिद्ध हो रही है।

समस्या कथन-

समस्या कथन से तात्पर्य समस्या को शीर्षक देने से है। जिसमें अनुसंधान कार्य का उद्देश्य, क्षेत्र विस्तार सुश्चिित होता है। उपरोक्त वर्णित सन्दर्भ से अभिप्रेरित होकर लघु शोधकर्त्ता ने इस समस्या को अध्ययन हेतु चुना है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य-

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शिक्षा सम्बन्धी विचारों के अध्ययन द्वारा शिक्षा जगत में संतुलित शैक्षिक विचार को प्रस्तुत करना ही वर्तमान अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त वर्तमान अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1.डॉ0 कलाम जी के जीवन दर्शन का अध्ययन करना।

2.डॉ0 कलाम के सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक एवं वैज्ञानिक कार्यो का अध्ययन करना।

3.डॉ0 कलाम जी के द्वारा शिक्षा के प्रसार के लिये किये गये कार्यो का अध्ययन करना।

4.डॉ0 कलाम द्वारा प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं वाले साहित्य का अध्ययन करना।

5.डॉ0 कलाम की वैज्ञानिक एवं राष्ट्रपति के रूप में भूमिका का अध्ययन करना।

6.डॉ0 कलाम का युवाओं को आह्नवान एवं युवाओं में चेतना जागृति के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या-

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम हमारे देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति, एक अभूतपूर्व वैज्ञानिक, मानवतावादी चिंतक, एक उर्जावान लेखक एवं प्रभावी शिक्षक हैं, जिन्होंने अपनी आसाधारण मानसिक क्षमता, कार्य के प्रति महान समर्पण व ईमानदारी, तीव्र लगन, कठोर परिश्रम तथा प्रगतिशील चिंतन के बल पर भारत देश को उन्नत देशों के समूह में सबसे आगे लाकर खड़ा कर दिया है।

अध्ययन- अध्ययन का अर्थ है प्रश्न के समस्या के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष तक पहुँचने के स्वीकृत की गई एक व्यवस्थित प्रक्रिया।

शैक्षिक विचारों का अध्ययन- सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कि विचार क्या है? विचार एक प्रकार की मानसिक प्रक्रिया है जो चेतना की अनुभूति करने, निर्णय लेने, कल्पना करने के लिए प्रयोग की जाती है। विचार, सोचने की प्रक्रिया का एक तत्व है तथा सामान्यतः सोचने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

दार्शनिक शोध विधिः-

शोध विधि के क्षेत्र में दो विधियों का प्रयोग किया जाता है- परिमाणात्मक एवं गुणात्मक। परिमाणात्मक विधि का प्रयोग वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में किया जाता है। गुणात्मक शोध विधि भी शिक्षा के क्षेत्र में समान रूप से महत्वपूर्ण है। इसका प्रयोग ऐतिहासिक और दार्शनिक शोध में किया जाता है।

1.डॉ0 कलाम के शैक्षिक विचार-

भारत के यशस्वी वैज्ञानिक, मानवतावादी चिन्तक व प्रभावी शिक्षक, भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शिक्षण का अपना विशिष्ट एवं निराला अंदाज है। डॉ0 कलाम शिक्षा को मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता मानते हैं उनका मनना है कि शिक्षा मनुष्य में छिपी हुई उसकी सृजनात्मकता को बाहर निकालने एवं विकसित करने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में ऐसे आदर्श नागरिकों का निर्माण होता है जो अपने जीवन में आने वाली प्रत्येक चुनौती का साहसपूर्वक मुकाबला कर सके। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति के बहुमुखी विकास का माध्यम है।

शिक्षा के उद्देश्य-

डॉ0 कलाम के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य भौतिक और अध्यात्मिक विकास के साथ-साथ आदर्श नागरिको का सृजन करना है। डॉ0 कलाम के अनुसार निर्धारित शिक्षा के उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध किया जा सकता है-

1.छात्रों की अंतर्निहित सृजनात्मक क्षमता का उच्चतम् विकास- डॉ0 कलाम के अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य छात्र की अंतर्निहित क्षमता और गुणों का उच्चतम् विकास करना है।

2.अध्यात्मिक आधार पर वैज्ञानिक प्रकृति का विकास- महान वैज्ञानिक डॉ0 कलाम का मानना है कि छात्रों में वैज्ञानिक प्रकृति का विकास किया जाना चाहिए, परन्तु उनके मूल में अध्यात्म का सार होना चाहिए।

3.सृजनात्मक और अभिनव परिवर्तन क्षमता का विकास- सृजनात्मकता के कई आयाम हैं, वैज्ञानिक अविष्कार, खोज तथा परिवर्तन से लेकर कलात्मक अभिव्यक्ति तक। सृजनात्मक लोगो में बदलाव को स्वीकार करने की ताकत विचारो व संभावनाओं से खेलने की इच्छा, दृष्टिकोण में लचीलापन और अच्छाइयों से आनंदित होने की आदत होती है।

4.बाधाओं पर विजय पाने की क्षमता का विकास- डॉ0 कलाम के अनुसार छात्रों को इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए कि वो मार्ग में आने वाली बाधाओं का धैर्य के साथ सामना कर सके और खुशहाल और समृद्व जीवन जी सकें।

5.नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों का विकास- शिक्षा के उद्देश्यों के रूप में मूल्य आधारित शिक्षा की महत्ता को कलाम जी ने बहुत अधिक महत्व दिया है। बच्चों को स्कूल में और घर पर मूल्य आधारित शिक्षा देने की जरूरत है।

6.आजीवन स्वतन्त्र शिक्षार्थी के रूप में ढालना- डॉ0 कलाम ने आदर्श नागरिकों में उच्च सृजनात्मक क्षमता के निर्माण पर बल दिया।

7.राष्ट्र विकास के लिए आदर्श नागरिकों का निर्माण- डॉ0 कलाम ने आदर्श नागरिकों में उच्च सृजनात्मक क्षमता के निर्माण पर बल दिया।

8.समाजिक भेद भावों की समाप्ति- डॉ0 कलाम का मानना है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में ऐसे तत्व होने चाहिए जो जाति, धर्म, वर्ण, लिंग के आधार पर कोई भी विभेद शेष न रहे।

शिक्षा के अन्य आयाम-

1.शिक्षा का पाठ्यक्रम- डा0 कलाम ने शिक्षा के पाठ्यक्रम में छात्र के शारीरिक विकास, मानसिक विकास, अध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास छात्रों की विभिन्न रूचियों के विकास पर बल दिया।

2.शिक्षण विधियाँ- डा0 कलाम ने बालक के विभिन्न स्तरों के अनुरूप शिक्षण की विधियाँ बताई है जिनका वर्णन इस प्रकार है-

1.डा0 कलाम ने प्राथमिक स्तर पर प्रश्नोत्तर विधि, अनुकरण विधि, करके सीखना विधि का सुझाव दिया।

2.माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर- डॉ कलाम ने इस स्तर पर समस्या विधि, निर्देशन और परामर्श विधि, प्रयोग विधि, समूह कार्य विधि, करके सीखना, स्व अवलोकन विधि का सुझाव दिया।

उच्च स्तर (विश्वविद्यालय स्तर)- डॉ0 कलाम ने यहाँ पर समस्या समाधान विधि, प्रयोग विधि, समूह कार्य विधि, अन्वेषण विधि के प्रयोग पर बल दिया।

1.शिक्षक- डॉ0 कलाम ने अपने शैक्षिक चिन्तन में शिक्षक को अत्यन्त गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा प्रदान की है।

2. शिक्षार्थी- डॉ0 कलाम और बच्चो के बीच आपसी प्रेम बहुत प्रसिद्ध है जानबूझकर ही बच्चो से मिलते रहे क्योंकि वे छोटी सी अवस्था में ही उन्हें प्रेरित करना चाहते है। छुट्टी के दिनों में छात्र गरीब और वंचित बच्चो को पढ़ाने का क्या करे। ताकि प्रकृतिक संतुलन बना रह सके।

3.शिक्षक- शिक्षार्थी सम्बन्ध- डॉ0 कलाम का मानना है कि शिक्षार्थी एवं शिक्षक जो कि छात्रों के ज्ञान एवं अधिगम का झरोखा है, के माध्य आत्मिक सम्बन्ध होने चाहिए।

4.विद्यालय- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में डॉ0 कलाम के अनुसार स्कूलों के आधारभूत शैक्षिक सुविधायें एवं उनतक पहँुचने के लिए बेहतर यातायात की सुविधाएँ होनी चाहिए।

5.अनुशासन- डॉ0 कलाम जीवन के प्रत्येक कार्य में अनुशासन की महत्ता की स्वीकार करते है। डॉ0 कलाम प्रभावत्मक एवं आत्मानुशासन के पक्षधर है तथा दमनात्मक अनुशासन को वे ठीक नहीं मानते है।

निष्कर्ष- इस प्रकार डॉ0 कलाम शिक्षा के क्षेत्र में भारत के प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करना चाहते है तथा भारत को पूर्व काल की भाँति विश्वमंच पर जगदगुरू के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं वो ज्ञान की असीमितता में विश्वास करते हुए कहते है कि पृथ्वी पर मनुष्य ही एकमात्र ज्ञानी बुद्धिमान प्राणी है जो तीन साधनों यथामन, अनुभव और बुद्धि द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। डॉ0 कलाम शिक्षा को मानव की अनिवार्य आवश्यकता मानते है जो मनुष्य में छिपी हुई सृजनात्मकता को बाहर निकालती है है। शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे भौतिकता, रचनाशीलता नवीनता तथा उधमशीलता का विकास होता है। तथा प्रौधोगिकी आधारित शिक्षण के प्रमुखता दी जाये तथा जो विज्ञान, कला, विधि, साहित्य तथा राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी रहे और हमारे महान नेताओं के अनुभवो का बखान करती हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीं

1. McGrath, J.H. : Research Methods & Designs for Education, penensylvania: International Text Book.

2. Mookerji, S.N. : History of Education in India, Delhi Moti Lal Banarsi Das (1957)

3. पाठक, पी0डी0 : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर, (2007)

4. रामनाथन, आर0 : क्या है कलाम? नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन (2007)

5. शर्मा, आर0ए0 : शिक्षा अनुसंधान, मेरठ आर0 लाल बुक डिपो (2007)

6. Tuckman, Bruce W. : Conducting Educational Research, New York, Harcout Bruce Jovanonich inc.

7. Young, Michael : Innovation & Research in Education, London Routledge and kegan paul (1965)

8. Dixit Sumita Vaidh : रामेश्वरम का लड़का जो राष्ट्रपति बन गया 18 मार्च 2010

9. Dr A.P.J. Abdul Kalam : भारतीयों के सीखने के विशेष सन्दर्भ पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में कार्यवाही में प्रकाशित लेख (2011)

10. Dr A.P.J. Abdul Kalam : व्यवसाय प्रबन्ध स्कूल में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की आवश्यकता अंतर्राष्ट्रीय जनरल मार्च 2012 में प्रकाशित

11. Dr A.P.J. Abdul Kalam : मूल्य शिक्षा और शिक्षक जून 2013